बेबी व्हेल का बचाव

जेजे की सच्ची कहानी



कैरोलिन अर्नोल्ड
हिंदी: इंदुजी

बेबी व्हेल का बचाव

जेजे की सच्ची कहानी



कैरोलिन अर्नोल्ड

हिंदी: इंदुजी

भूमिका

ग्रे व्हेल प्रशांत महासागर में रहती हैं और गर्मियों का समय वह अलास्का के तट के पास बिताती हैं. सर्दियों के आने से पहले वह तैर कर दक्षिण में बाजा कैलिफोर्निया के गर्म पानी में आ जाती हैं. बाजा कैलिफोर्निया मैक्सिको का एक भाग है. वहाँ उथली खाड़ियों में मादा व्हेल बच्चों को जन्म देती हैं. कई बार मैक्सिको पहुँचने से पहले ही कोई मादा बच्चे को जन्म दे देती है. कभी-कभी यह नवजात बच्चे अपनी माताओं से अलग हो जाते हैं. अपनी माँ से अलग होकर एक बच्चा अकसर जीवित नहीं रह पाता. जेजे एक व्हेल का बच्चा था जो कैलिफोर्निया के तट के पास अपनी माँ से अलग हो गया था. इस बच्चे को लॉस एंजलिस, कैलिफोर्निया के तट के निकट 10 जनवरी 1997 के दिन देखा गया था. वह भूखा, बुरी तरह थका हुआ और मृत्यु के निकट था. यह जेजे के बचाव, स्वास्थ्य-लाभ और सागर में फिर से लौटने की कहानी है.



जनवरी 1997 में वह एक ठंडी और तेज़ हवा वाला दिन था. दक्षिण कैलिफोर्निया के सागर की लहरें आ-आकर तट से टकरा रही थीं. क्षितिज पर घने बादल दिखाई दे रहे थे. तट पर चलते हुए लोगों ने सागर की लहरों में एक बड़े, धुंधले जीव को तट की ओर बहते देखा. जब वह जीव पानी में घूमा तो उसके बड़े फ्लिपर्स और विशाल चपटी पूँछ दिखाई दी. लोगों ने देखा कि वह एक 14 फुट लंबी नन्ही ग्रे व्हेल थी.

वह नन्ही व्हेल एक मादा थी. वह इतनी कमज़ोर थी कि मुश्किल से ही हिल पा रही थी. उसे तुरंत सहायता की ज़रूरत थी. दर्जनों लोगों ने, जिनमें लाइफगार्ड, पुलिस और पशुओं का बचाव करने वाले स्वयंसेवक भी थे, उस नन्ही व्हेल को पानी से बाहर निकाला और एक ट्रक में रख दिया. उसको बचाने वालों ने तय किया कि उसे सैन डिअहगो के सी-वर्ल्ड में ले जाना ही उचित होगा. वहाँ के विशेषज्ञ नन्ही व्हेल को वह खाना और पानी और मदद दे सकते थे जिसकी उसे तुरंत ज़रूरत थी. जब व्हेल स्वस्थ होकर इतनी बड़ी हो जाएगी कि अकेले सागर में रह पाए तो उसे सागर में फिर छोड़ दिया जाएगा. लेकिन पहले उसे शक्तिशाली बनना था.





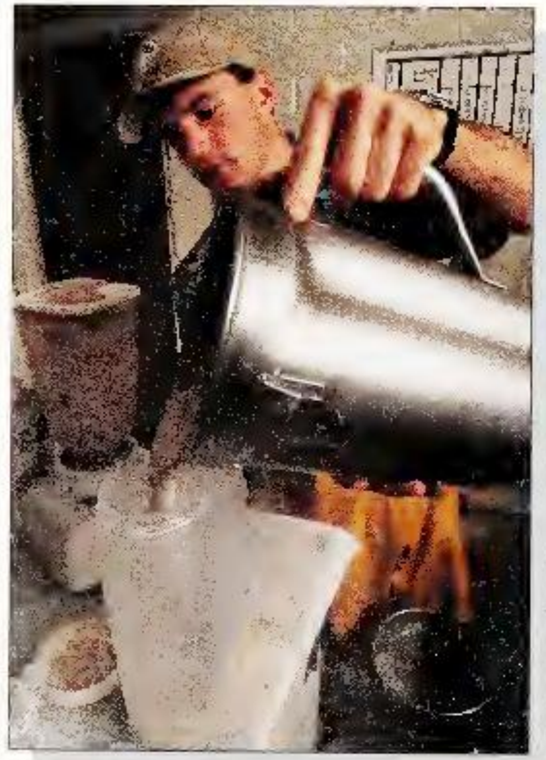
सी-वर्ल्ड में देखभाल करने वालों ने उसे एक उथले तालाब में डाला और सावधानी से पकड़ कर उसे पानी के अंदर रखा. उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि उसके सिर का ऊपरी भाग पानी से बाहर रहे और वह सांस ले पाए. अन्य स्तनपायी की तरह एक व्हेल खुली हवा में सांस लेती है. उसके सिर के ऊपर दो सुराख होते हैं जो वायुमार्ग कहलाते हैं और इनके रास्ते ही हवा उसके फेफड़ों तक पहुँचती है. जब वह हवा बाहर निकालती है तो हवा में नमी के कारण सिर के ऊपर एक फव्वारा सा बन जाता है.

पशु-चिकित्सकों ने जब उसका निरीक्षण किया तो उन्होंने अनुमान लगाया कि नन्ही व्हेल का जन्म एक सप्ताह पहले हुआ होगा. उन्हें लगा कि व्हेल ने कई दिनों से कुछ भी खाया या पिया नहीं था. उसे तुरंत खाने और पानी की ज़रूरत थी.





साधारणतया व्हेल के बच्चे को सारा पोषण और पानी अपनी माँ के दूध से मिल जाता है. लेकिन उसका ध्यान रखने वालों के पास उस नन्ही व्हेल को पिलाने के लिए व्हेल का दूध नहीं था. इसलिए उन्होंने दूध जैसा एक घोल बनाया जिसमें उन्होंने पानी, सूखा दूध, क्रीम और कुछ पौष्टिक तत्व मिलाए. शुरु में उन लोगों ने यह गाड़ा दूध एक लंबी नली द्वारा सीधा व्हेल के पेट में डाल दिया. लेकिन शीघ्र ही नन्ही व्हेल खुद से वह स्वयं दूध पीना सीख गई. नियमित रूप से खाना मिलने के कारण वह बढ़ने और ताकतवर होने लगी.



सी-वर्ल्ड में आने के बाद आरंभ के दिनों में देखभाल करने वाले दिन-रात उस पर नज़र रखते थे. वह उसका कोई नाम रखना चाहते थे. उन्होंने अपनी एक मित्र, जूडी जोंस के नाम पर नन्ही व्हेल का नाम रखा, जेजे. जूड़ी जोंस ने सागर में फंसे कई स्तनधारियों की देखभाल की थी.



जिस दिन जेजे को सागर से बाहर निकाला गया था, उस दिन उसका वज़न 1670 पाउंड था. एक मानव शिशु की तुलना में यह वज़न बहुत अधिक है. लेकिन एक वयस्क व्हेल की तुलना में बहुत थोड़ा है. ग्रे व्हेल सागर के सबसे विशाल जीव हैं. वयस्क ग्रे व्हेल 50 फुट से भी अधिक लंबी होती है और उसका वज़न 70000 पाउंड हो सकता है.



सी-वर्ल्ड में एक महीना बिताने के बाद जेजे का वज़न बढ़ कर 2570 पाउंड हो गया था. उसकी लंबाई भी 18 इंच बढ़ गई थी. अब जेजे छोटे तालाब में समा नहीं पा रही थी. उसकी देखभाल करने वालों ने उसे शामु स्टेडियम के पास एक बड़े तालाब में ले जाने का निर्णय लिया.

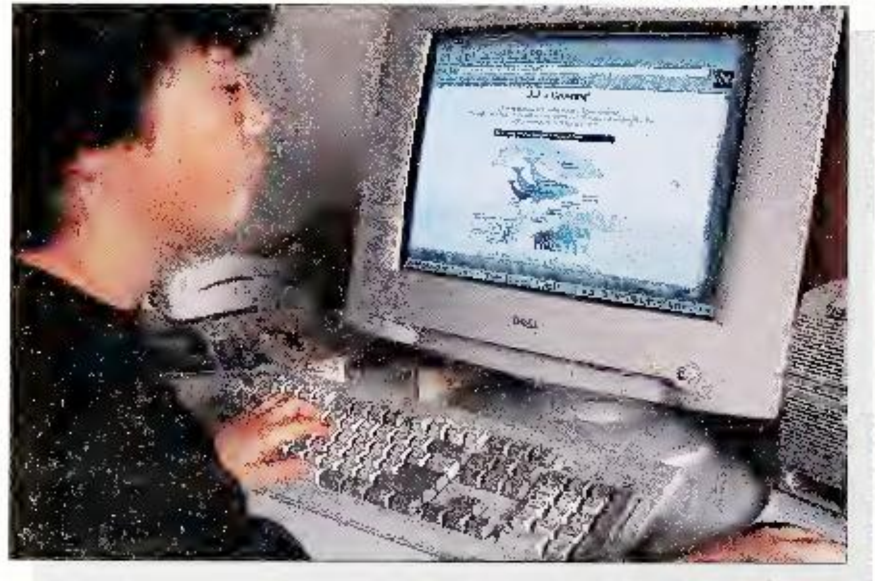
2500 पाउंड की व्हेल को दूसरे तालाब में ले जाना सरल नहीं था. जेजे को एक स्लिंग में रखा गया फिर क्रेन के सहायता से उसे उठाया गया और उसे बड़े तालाब में पहुँचा दिया गया.



नए तालाब में लोग उसे पानी का ऊपर देख सकते थे. एक बड़ी खिड़की के द्वारा उसे पानी के अंदर भी देखा जा सकता था. एक प्रकार से वह एक छोटी, जीवित पनडुब्बी जैसी लगती थी.

जेजे अपने नए घर को लेकर उत्सुक थी और वहाँ के वातावरण की खोज करने में उसे मज़ा आ रहा था. अपनी पूँछ के मदद से धीमी, मनोहर गति से पानी में तैरती थी. शरीर के दोनों और स्थित बड़े फ्लिपर्स का मदद से वह तेज़ गति से तैरती थी.

लोगों को उसे देखना अच्छा लगता था और शीघ्र ही वह सी-वर्ल्ड की सबसे प्रसिद्ध जीव बन गई. उसके बचाव की कहानी ने उसे चर्चित बना दिया था. जो लोग उसे देखने के लिए सी-वर्ल्ड नहीं आ सकते थे वह सी-वर्ल्ड की वैबसाइट से उसके विषय में जानकारी लेने लगे थे.





जेजे जब चार महीने के हो गई तो वह छोटी मछलियां और अन्य ठोस पदार्थ खाने लगी थी. क्रिल, जो एक प्रकार की छोटा घोंघा होता है, उसका पसंदीदा आहार था. जेजे ने जान लिया था कि जब उसकी देखभाल करने वाले तालाब के निकट आते थे तब अगर वह मुंह खोल किनारे के पास आ जाती तो उसे खाने के लिए कुछ न कुछ मिल जाता था.

कई महीनों तक जेजे को ठोस खाना और उसके लिए बनाया खास दूध एक साथ दिए जाते थे. लेकिन जब वह आठ माह की हो गई तो उसे दूध देने की आवश्यकता न रही. अब वह ठोस खाने पर जीवित रह सकती थी. सब बढ़ते हुए युवाओं की तरह जेजे को भी बहुत भूख लगती थी. कई बार तो वह एक दिन में 500 पाउंड खाना खा जाती थी.





जेजे पहली शिशु ग्रे व्हेल है जिसे बचा कर एक मॅरीन पार्क में रखा गया था और वहाँ उसकी देखभाल की गई थी. लोगों को सी-वर्ल्ड में एक ग्रे व्हेल को नज़दीक से देखने का दुर्लभ अवसर मिला था.

अन्य ग्रे व्हेलों के समान जेजे के दांत नहीं हैं. दांतों के बजाय उसके मुंह में ऊपर की तरफ एक सख्त, झालरनुमा बैलीन है. एक ग्रे व्हेल आमतौर पर अपने मुंह के किनारे से समुद्र तल से पानी के साथ भोजन को चूस कर अपने विशाल मुंह में भर लेती है. फिर अपनी जीभ के सहायता से पानी और मिट्टी को बैलीन के रास्ते बाहर धकेल देती है. बैलीन एक छलनी का काम करती है और भोजन के टुकड़ों के अलग कर निगल लेती है.





जब जेजे सागर में वापस जाएगी जब वहाँ पर उसे खाना खिलाने के लिए कोई लोग न होंगे. उसे अपना आहार स्वयं तलाश कर खाना होगा. उसकी देखभाल करने वाले लोग, उसका कुछ भोजन तालाब के तल पर रखने लगे. जेजे ने उस खाने को खोजना जल्दी ही सीख लिया. हर दिन गोताखोर उसके खाने को अलग-अलग जगह छिपा कर रखते थे ताकि जेजे को खाना ढूंढने का अच्छा अभ्यास हो जाए. अगले दिन तालाब में बचे हुए खाने को निकाल कर तौला जाता था. उससे देखभाल करने वालों को पता चलता था कि जेजे ने पिछले दिन कितना खाना खाया था.

जैसे-जैसे जेजे बड़ी हुई, उसकी चमड़ी के नीचे चरबी की मोटी परत बन गई. यह चर्बी जिसे बल्बर कहते हैं, सागर में लौटने के बाद शुरु के दिनों में उसे ऊर्जा प्रदान करने वाली थी. यह चर्बी उसके शरीर को गर्म भी रखने वाली थी.





इधर जेजे अपना खाना स्वयं ढूंढना सीख रही थी और उधर उसकी देखभाल करने वाले उसे फिर से सागर में छोड़ने की योजना बना रहे थे. उन्होंने तय किया कि जेजे को सागर में छोड़ने का उचित समय वसंत को शुरु के दिन होंगे. उन दिनों में उत्तर में अलास्का की ओर जाते हुए ग्रे व्हेल के झुंड दक्षिण कैलिफोर्निया के तट के पास से गुज़र रहे होंगे. जेजे की देखभाल करने वालों की उम्मीद थी कि वह किसी एक झुंड में शामिल हो जाएगी.

सागर के अंदर ग्रे व्हेल ऊँची-ऊँची आवाज़ें निकाल कर एक-दूसरे से बातें करती हैं. सी-वर्ल्ड के वैज्ञानिकों ने इन आवाज़ों को रिकार्ड किया और जेजे का सुनाया ताकि वह इन आवाज़ों से परिचित हो जाए. यह जानने के लिए कि जेजे भी वैसी आवाज़ें निकाल पा रही थी या नहीं, उन्होंने जेजे की आवाज़ों को सुना.





जेजे को पहले जन्मदिन के बाद, जनवरी में हर दिन कुछ घंटों के लिए जेजे के तालाब में दो सी-लायन भी छोड़े गए. वैज्ञानिक उन सी-लायन्स की पीठ पर विडियो-कैमरा बांध कर उन्हें पानी के अंदर तैरना सिखा रहे थे. जब भी सी-लायन्स पानी का अंदर डुबकी लगाते, पीठ पर बंधे कैमरे उनके सामने का दृश्य रिकार्ड कर लेते. इन प्रशिक्षित सी-लायन्स का मदद से वैज्ञानिक व्हेल और सागर के अन्य जीवों के बारे में इकट्ठा करना चाहते थे.

जेजे के तालाब में तैरते हुए, सी-लायन्स व्हेलों के निकट आने के लिए प्रशिक्षित हो गए. उधर जेजे को भी अन्य जीवों साथ रहने का अवसर मिला.





फरवरी के अंतिम दिनों तक जेजे का वज़न बढ़ कर 18000 पाउंड हो गया था. वह लगभग 30 फुट लंबी हो गई थी. शीघ्र ही उसके सागर में लौटने के समय आने वाला था.

उसकी देखभाल करने वाले उसे सागर में छोड़ने के लिए सब तैयारी करने लगे. तालाब से बाहर निकालने के लिए उसे एक स्लिंग में डालने का अभ्यास वह लोग करने लगे. उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि जिस ट्रक में उसे लाद कर बंदरगाह की ओर ला जाया जाएगा उस ट्रक में वह सही ढंग से रखी जा सकेगी. योजना का हर चरण का उन्होंने बार-बार अभ्यास किया.

हर कोई यह सोच रहा था कि सागर में छोड़े जाने के बाद जेजे किस तरह व्यवहार करेगी. सागर में छोड़ने से पहले जेजे की पीठ पर चार छोटे रेडियो ट्रैन्ज़मीटर बांधे जाएंगे. सागर में जाने के बाद जेजे जब भी सांस लेन के लिए पानी से बाहर आएगी तो यह ट्रैन्ज़मीटर संकेत भेजेंगे. इन संकेतों से पता चलेगा कि जेजे किस दिशा में गई थी.





आखिरकार 31 मार्च 1998, मंगलवार का दिन आ ही गया. इसी दिन को जेजे को सागर में छोड़ना था. उसकी देखभाल करने वाले प्रसन्न भी थे और उदास भी. वह प्रसन्न थी कि जेजे सागर में लौट रही थी पर उससे बिछुड़ने का दुख भी था. उसे समर्थ बनाने में उन्होंने बहुत मेहनत की थी. उसकी कमी उन्हें खलेगी पर वह जानते थे कि जेजे सागर में हीं रह सकती थी.

उस दिन सुबह-सुबह उसकी देखभाल करने वालों ने उसे अंतिम बार तालाब से बाहर निकाला. फिर सावधानी के साथ उसे एक ट्रक के साथ लगे एक विशाल कंटेनर में रख दिया. कंटेनर का अंदर फोम की परत से एक नर्म बिस्तर सा बनाया गया था जिस पर बंदरगाह की ओर ले जाते समय आराम कर सकती थी. इस यात्रा के दौरान उसकी देखभाल करने वाले उसका ध्यान रखने के लिए उसके साथ रहे.





सुबह का समय था. आकाश में बादल छाए हुए थे. जिस ट्रक में जेजे थी वह सैन डिहगो की सड़कों पर चलता हुआ बंदरगाह की ओर जा रहा था. बंदरगाह पहुँचने पर जेजे को कंटेनर से निकाल कर कोस्ट गॉर्ड के एक जहाज़ पर रख दिया गया. साधारणतया उस जहाज़ की विशाल क्रेन से बड़ी-बड़ी नावें सागर के पानी पर उतारी जाती थीं. उस दिन नाविक उस क्रेन से 10 टन की व्हेल को सागर में उतारने वाले थे.

नाविकों ने जेजे की स्लिंग को जहाज़ के डैक से बांध दिया. काम करते समय वह जेजे पर पानी की बौछार करते रहे ताकि उसका शरीर गीला और ठंडा रहे. फिर यह जांच कर ली गई की जेजे को सही तरीके से बांधा गया था. आखिरकार जहाज़ बंदरगाह से चल दिया.





किनारे से दो मील दूर पहुँच कर जहाज़ रुक गया. आखिरकार वह घड़ी आ गई थी जब जेजे सागर में वापस जाने वाली थी. नाविकों ने स्लिंग को घुमा कर जहाज़ के एक तरफ कर दिया और धीरे-धीरे उसे पानी की ओर नीचे किया.

“व्हेल के छोड़ दो!” जहाज़ के कप्तान ने आदेश दिया. स्लिंग एक तरफ से खोल दी गई और जेजे पानी में चली गई. सी-वर्ल्ड में चौदह महीने बिताने के बाद जेजे वापस अपने घर पहुँच गई थी. जब जेजे ने पानी में गहरी सांस लेकर पानी में डुबकी लगाई तो हर किसी ने प्रसन्नता में ताली बजाई. अब जेजे अपने पर ही निर्भर थी.

वैज्ञानिकों ने उस स्थान के आसपास छोटी नावों में चक्कर लगाए. वह जेजे के संकेतों को सुनने का प्रयास कर रहे थे. उन्होंने कई बार उसे अपना सिर पानी से बाहर निकालते देखा. उसके ट्रैन्ज़मीटरों से आते संकेतों से पता चला कि वह अपने आसपास के सागर की खोज कर रही थी. वैज्ञानिकों को ऐसा लगा कि वह एक साधारण ग्रे व्हेल समान ही व्यवहार कर ही थी.





वैज्ञानिकों का अनुमान था कि जेजे की पीठ पर लगे ट्रैन्ज़मीटरों की सहायता से वह कई माह तक उसकी यात्राओं की निगरानी कर पाएंगे. लेकिन सागर में छोड़े जाने के अगले दिन ही सारे ट्रैन्ज़मीटर पानी में गिर गए. अंतिम संकेत से पता चला था कि अन्य ग्रे व्हेलों के समान वह उत्तर दिशा में अलास्का की ओर जा रही थी.

सागर में उसके लिए जीवन आसान नहीं था. जेजे को स्वयं अपने लिए आहार खोजना होगा, उसे स्वस्थ रहना होगा और खतरों से बचना होगा. भाग्य ने उसका साथ दिया तो वह बड़ी होगी, लंबे समय तक जिएगी और कैलिफोर्निया के तट के दोनों ओर कई यात्राएं करेगी. हर सर्दी और वसंत में जब ग्रे व्हेल अपनी वार्षिक यात्रा करेंगी तब हमें यह जानने की उत्सुकता होंगे कि क्या जेजे, जो हमारे प्रयास से सागर लौट पाई थी, उनमें से एक होगी

